हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 10 अंक 10 कांगड़ा। शनिवार, 06 जुलाई-12 जुलाई, 2024 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 23 आषाढ़, विक्रमी संवत् 2081 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/24-26

होशियार सिंह के सिर चढ़कर बोल रहा पैसे का गुरूर -पढ़ें पेज 2

भगवान जगन्नाथ का महाप्रसाद...

हर साल जगन्नाथ रथ यात्रा धूमधाम से निकाली जाती है। इसमें देश के कोने-कोने से श्रद्धालु हिस्सा लेने के लिए आते हैं। इस बार भगवान जगन्नाथ की 147वीं रथयात्रा निकाली जाएगी। भगवान जगन्नाथ के मंदिर के प्रसाद की अपनी एक अलग विशेषता है।

जगन्नाथ पुरी के मंदिर में मिलने वाले भोग को महाप्रसाद कहा जाता है। इसे ग्रहण करने के लिए भक्त दूर-दूर से आते हैं। ये प्रसाद सभी जगहों से भिन्न होती है। जगन्नाथ मंदिर में स्थित रसोई को दुनिया की सबसे बड़ी रसोई भी कहा जाता है। यहां भगवान जगन्नाथ के लिए 56 भोग भी तैयार किए जाते हैं।

मिट्टी को एक पवित्र तत्व माना जाता है। हिंदू धर्म में, मिट्टी को देवी पृथ्वी का प्रतीक माना जाता है, जो जीवन और समृद्धि का स्रोत है। मिट्टी प्रकृति का प्रतीक है, और जगन्नाथ जी को प्रकृति के साथ जोड़ा जाता है। मिट्टी के बर्तन में प्रतीक बनाकर, भक्त प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करते हैं। मिट्टी के बर्तन सादगी और विनम्रता का प्रतीक हैं। जगन्नाथ जी को सभी भक्तों के लिए समान माना जाता है, और मिट्टी के बर्तन में बनी प्रतीक इस भावना को दर्शाती है। इसलिए भगवान जगन्नाथ का प्रतीक मिट्टी के बर्तन में बनाया जाता है।

हिंदू धर्म में, मिट्टी को देवी पृथ्वी का प्रतीक माना जाता है, जो जीवन और समृद्धि का स्रोत है। इतना ही नहीं मिट्टी के बर्तन में बना महाप्रसाद भगवान जगन्नाथ को बेहद प्रिय हैं। इसलिए भगवान जगन्नाथ का महाप्रसाद मिट्टी के बर्तन में बनाया जाता है।

जगन्नाथ मंदिर में स्थित रसोई को दुनिया की सबसे बड़ी रसोई कहा जाता है। यहां मिट्टी और ईंट से बने 240 चूल्हे हैं। इसके साथ ही 500 रसोइए 300 सहयोगियों के साथ मिलकर 56 भोग बनाते हैं। वहीं यहां भोग को बनाने की प्रक्रिया भी अलग है। यहां चूल्हे पर 9 बर्तन एक के ऊपर एक रखे जाते हैं। जो नवग्रह, 9 अनाज और नवदुर्गा का भी प्रतिनिधित्व करता है। खास बात यह है कि ऊपर रखे बर्तन में सबसे पहले खाना पक जाता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री